

प्रेषक,

राधा रत्नाली,
सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

बिदेशक,
सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास,
देहरादून, उत्तराखण्ड।

सैनिक कल्याण अनुभाग

देहरादून दिनांक: २२, जनवरी २००८

विषय: सैनिक विश्राम गृह अधिवासन नियमावली-२००२ में आवश्यक संशोधन के संबंध में।

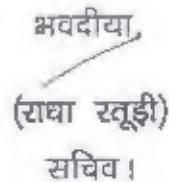
महोदय,

उपर्युक्त विषयक, शासनादेश संख्या:-423-सै.क.-02-29(सैनिक कल्याण)/2002 दिनांक ०८ नवम्बर, २००२, संशोधित शासनादेश संख्या:- २२६/XVII(1)/०४-०९ (२९)/२००२, दिनांक २८ सितम्बर, २००४ एवं संशोधित शासनादेश संख्या:- ३२६/XVII(2)/२००७-२९(सै.क.)/२००२, दिनांक १३ सितम्बर, २००७ तथा आपके पत्र संख्या:-४००३/सै.क./सै.वि.गृ. नियमावली/संसो. दिनांक १० दिसम्बर, २००७ की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुये मुझे यह कहने का बिदेश हुआ है कि श्री राज्याल महोदय “उत्तराखण्ड सैनिक विश्राम गृह अधिवासन नियमावली-२००२” में तत्काल प्रभाव से निम्नानुसार संशोधन किये जाने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

क्र.स.	सन्दर्भ	पूर्व प्रस्तर	संशोधित प्रस्तर
१.	खण्ड-एक प्र-२(ज), (झ) एवं (ट)	जीवन प्रस्तर सम्पादित किया जा रहा है।	<p>२(ज) - “सामान्य पर्यटक” का तात्पर्य ऐसे पर्यटकों से है, जो पर्यटन विभाग के मानक के अनुसार पर्यटक की श्रेणी में आते हैं।</p> <p>२(झ) - “गाझड़” का तात्पर्य ऐसे सैनिकों एवं उनके आक्रितों से है, जो पर्यटन विभाग द्वारा नियंत्रित मानदण्डों के समकक्ष योग्यता/अहता घासित करते हों। पूर्व सैनिक एवं उनके आक्रितों की अनुपलब्धता की स्थिति में सामान्य नागरिक भी गाझड़ की श्रेणी अंतर्गत परिभाषा में सम्भालित समझे जायेंगे।</p> <p>२(ट) - “कर्मक प्रतिविधि” का तात्पर्य सैनिक कल्याण विभाग में कार्यरत ऐसे कर्मक प्रतिविधियों से है, जिन्हें प्रतिमाह २०००/- की दर से मानदेय मुनाफा जुगतान किया जा रहा हो।</p>

2.	स्पष्ट-दो प्र-1 (अ)	<p>विशाम गृह में कार्यस्त सैनिक अधिकारी/सैनिक, पूर्व सैनिक व अर्द्ध सैनिक संगठन के अधिकारी, कर्मचारी तथा उत्तरांश्ल सचिवालय में कार्य करने वाले अधिकारी तथा कर्मचारी वहर सकते हैं। उनके उपरोक्त वर्णित अभिन्नों को छोड़कर अधिवासन करने वालों के साथ उनके संबंधी, भिन्न और बौकर आदि नहीं वहर सकते हैं।</p>	<p>विशाम गृह में कार्यस्त सैनिक अधिकारी/सैनिक, पूर्व सैनिक व अर्द्ध सैनिक संगठन के अधिकारी, कर्मचारी तथा उत्तरांश्ल सचिवालय में कार्य करने वाले अधिकारी तथा कर्मचारी वहर सकते हैं। उक्त के अतिरिक्त उपलब्धता की स्थिति में सामान्य पर्यटक भी अधिवास कर सकते हैं। उनके उपरोक्त वर्णित अभिन्नों को छोड़कर अधिवासन करने वालों के साथ उनके संबंधी, भिन्न और बौकर आदि नहीं वहर सकते हैं।</p>
3.	स्पष्ट-रीज प्र-1 कुमाऊँ (5) एवं (6)	<p>ज्योति प्रस्तार समिति किया जा रहा है।</p>	<p>(5) सामान्य पर्यटकों से किश्ति निर्धारण गक्काल नगरकाल विकास बोगम एवं कुमाऊँ मण्डल विकास बोगम के पर्यटक गृहों में निर्धारित किराये की दर तथा विशाम गृह में उपलब्ध सुविधाओं के इष्टिग्रास औचित्यपूर्ण ढंग से निर्धारित किया जायेगा अथवा जो दर सरकार द्वाय समथ-समय पर निर्धारित की जाय।</p> <p>(6) "गाझड़", जिसका सम्पूर्ण विदर्शन/सम्पर्क द्वारा जिला सैनिक कल्याण अधिकारी एवं कर्मचार प्रतिनिधियों के पास उपलब्ध रहेगा तथा जिसे विशाम गृह के व्यवस्थापक कार्यालय एवं संविधित जनपद के जिला सैनिक कल्याण एवं युवराज कार्यालय में बस्ता भी किया जायेगा, जिसे विशाम गृह के अव्वोदासियों की मांग एवं सुविधा के अनुसार व्यवस्थापक एवं जिला सैनिक कल्याण अधिकारी द्वाय उपलब्ध कराया जायेगा तथा गाझड़ की पारिश्रमिक का नियमानुसार पारिश्रमिक उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी भी व्यवस्थापक एवं जिला सैनिक कल्याण अधिकारी की रहेगी, जिसका भुगतान संविधित अव्वोदासी द्वाय ही किया जायेगा।</p>

2. यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या:-846(प)/वि.अनु.-3/2007 दिनांक 21 जनवरी, 2008 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी की जा रही है।

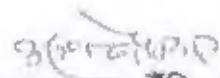

 भवदीया,
 (राजा रघुवी)
 सचिव।

पृष्ठांकन संख्या:- (1)/XVII(2)/2008-29(सै0क0)/2002 तदिनांक।

प्रतिलिपि :- निम्नलिखित को सूचनार्थी एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, महाभिम श्री राज्यपाल महोदय, उत्तराखण्ड।
2. प्रमुख सचिव, मा० मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड।
3. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
4. समस्त जिला सैनिक कल्याण अधिकारी, उत्तराखण्ड।
5. समस्त जिला सैनिक कल्याण अधिकारी, उत्तराखण्ड।
6. अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, उत्तराखण्ड पूर्व सैनिक कल्याण निगम लि०, देहरादून।
7. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, उत्तराखण्ड सचिवालय परिसर, देहरादून।
8. उपनिदेशक, राजकीय मुद्रणालय छड़की (हरिद्वार) को इस आशय से प्रेषित कि नियमावली की 1000 प्रतियां सुनित कर सैनिक कल्याण अनुभाग को प्रेषित करने का कष्ट करें।

आङ्ग से,


(अरुण कुमार धंडाल)
अपर सचिव।